मॉड्यूल – बालिका शिक्षा

भाग – 1	भाग – 2	भाग – 3	भाग – 4
बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना	बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि करना	बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं को जानना	बालिकाओं के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि करना

शीर्षक :

मध्यप्रदेश में बालिका शिक्षा के बढ़ते कदम

उद्देश्य :

1. समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा कर सकेंगे।
2. बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि कर सकेंगे।
3. बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं से पालकों, बालिकाओं एवं शिक्षकों को अवगत करा सकेंगे।
4. बालिकाओं की उपस्थिति (ठहराव) एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि कर सकेंगे।

परिचय

बालिका शिक्षा का आशय बालिकाओं के लिए की जाने वाली शिक्षा व्यवस्था से है। पूर्व प्राथमिक, माध्यमिक,उच्च माध्यमिक महाविद्यालय आदि स्तर पर बालिका शिक्षा की व्यवस्था की जाती है तथा शिक्षा संस्थाएं खोली जाती हैं। वे सभी बालिका शिक्षा के अन्तर्गत आती हैं। स्वाधीनता के बाद पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा के साथ-साथ महिला शिक्षा के विकास के लिए अनेक प्रयास किये गये। इन्हीं प्रयासों की वजह से देश में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा हुई। शिक्षा जीवन का अनिवार्य अंग है चाहे वह लड़का हो या लड़की, शिक्षा बालिकाओं के जीवन के मार्ग को चुनने का अधिकार देने का पहला कदम है। एक शिक्षित बालिका में कौशल, सूचना, प्रतिभा, और आत्मविश्वास होता है। एक सुशिक्षित बालिका देश के विकास में महत्त्वपूर्ण भागीदारी निभा सकती है। शिक्षित लड़की अपने भविष्य को सही आकार देती है। देश की महिलाओं को शिक्षित किये बिना देश का विकास नहीं हो सकता। हमारी सरकार द्वारा प्रारंभ से ही कोठारी कमीशन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति1986, प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992, यशपाल समिति, एनसीएफ 2005, बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एनपीईजीएलई) इन सबके माध्यम से बालिका शिक्षा में वृद्धि के लिए सकारात्मक प्रयास किये गये।

कीवर्डस

नामांकन (जीईआर), ठहराव (जीएआर), शैक्षणिक स्तर में वृद्धि (जीएएमआर)

शाला त्यागी (ड्रॉप आउट)

भाग - 1 :
बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करना

उद्देश्य :

बालिका शिक्षा के महत्व् को समझ सकेंगे।

परिचय

बालिका शिक्षा भारत सरकार के एजेंडे की सर्वोच्च प्राथमिकता है। देश में बालिका शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए 'मेरी सरकार' (MY GOVERNMENT) का बालिका शिक्षा समूह का एक मंच बनाया है जिसमें बालिकाओं के लिए टोल फ्री नंबर(1090), हेल्प लाइन नंबर(1091) भी रखा है। आजादी से पूर्व बालिका शिक्षा में हमारे कुछ महापुरुषों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जैसे- राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले आदि। हमारे देश में बालिका शिक्षा के लिए यह सभी नाम प्रेरणा स्त्रोत के रूप में रहे हैं। बालिका शिक्षा के प्रति जो सकारात्मक प्रयास किये गये, उससे वर्तमान समाज में जाग्रति आयी है।

'वेदना नहीं, वरदान होती है बेटी - आस्था और अरमान होती है बेटी।
वजूद उसका कभी मिट सकता नहीं, भार नहीं जीवन का सार होती है बेटी।।'

बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए विद्यालयों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित कराना आवश्यक है। गतिविधियों के माध्यम से समाज में जागरूकता आएगी। बालिका शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है दुनिया की आधी आबादी का हिस्सा महिलाएं ही हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण का एक मात्र उपाय बालिकाओं की शिक्षा ही है। बेहतर माता-पिता, जागरूक नागरिक महिलाएं ही बनाती है। शिक्षा महिलाओं को स्वस्थ और खुशहाल जीवन देती है। शिक्षित महिला परिवार को गरीबी से बचाती है।

जैसा कि हम जानते हैं कि एक बालक की शिक्षा उसकी स्वयं की शिक्षा होती है लेकिन एक बालिका के शिक्षित होने पर पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। इसलिए बालिका शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है।

जूडो कराटे सीखती बालिकाएं।

समाज में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए समाज को बालिका शिक्षा का महत्व बताना आवश्यक होगा। जिससे समाज में कई सारे बदलाव आ सकते हैं। बालिका शिक्षा से समाज में आने वाले बदलाव इस प्रकार हैं। जैसे मातृ मृत्यु दर कम करना, शिशु मृत्यु दर कम करना सामाजिक विकास में सुधार, बाल विवाह रोकना, जन संख्या वृद्धि को कम करने के लिए, कुपोषण को कम करने के लिए,घरेलू हिंसा, यौन हिंसा कम करने के लिए, बेहतर स्वास्थ्य उपलब्ध कराना, आर्थिक सशक्तिकरण, गरिमा और सम्मान की रक्षा को सुनिश्चित कर पाना।

इस प्रकार बालकों के साथ-साथ बालिकाओं को शिक्षित करने से समाज मे ढेर सारे परिवर्तन आ सकते हैं। अतः समाज एवं सरकार का दायित्व है कि बालिका शिक्षा हेतु नई-नई गतिविधियों का आयोजन करें। अतः बालिका शिक्षा में जागरूकता लाने हेतु गतिविधियां निम्न हैं जैसे- माँ बेटी मेला, बालिका शिक्षा वृद्धि हेतु रथयात्रा निकालना,. बालिका शिक्षा के लिए चित्र एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन करना, स्लोगन एवं दीवार लेखन, बालिका शिक्षा पर रैलियां, विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित कराना, टेलीविजन, रेडियो, फेसबुक, व्हाटस एप, समाचार पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से बालिका शिक्षा के कार्यक्रम प्रसारित कराना, भ्रूण हत्या पर रोक कानूनी प्रावधान तैयार करना, बाल विवाह पर रोक, लिंगानुपात में वृद्धि हेतु प्रयास, बालिकाओं के स्वास्थ्य सुधार के लिये प्रयास, ये प्रयास यहीं ना रुके आगे बढ़ते जाएं। जिसमें मध्यप्रदेश सरकार ने कुछ नई योजनाएं जोड़ी जो इस प्रकार हैं- लाडली लक्ष्मी योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं योजना, उड़ान योजना, गांव की बेटी योजना, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय कुछ महत्वपूर्ण योजनाएं विस्तार से इस प्रकार है -

लाडली लक्ष्मी योजना

बालिकाओं के प्रति लोगों में सकारात्मक सोच एवं उनके लिंग अनुपात में सुधार हेतु मध्यप्रदेश सरकार ने लाडली लक्ष्मी योजना शुरू की, यह योजना 1 अप्रैल 2007 को प्रारंभ की गई। इसके बाद यह योजना 6 अन्य राज्यों में भी लागू की गई, इस योजना का उद्देश्य लोगों में बालिकाओं के प्रति स्नेह और शैक्षणिक स्तर एवं स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करना है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना

यह योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय एवं मानव संसाधन एवं विकास मंत्रलाय के द्वारा 22 जनवरी 2015 को शूरू की गई। इसका उद्देश्य बालिकाओं का संरक्षण एवं सशक्तिकरण करना है। इस योजना के द्वारा लड़कियों के घटते हुए अनुपात में वृद्धि करना है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय

समग्र शिक्षा के उददेश्यों में स्कूली शिक्षा के समस्त स्तरों पर जोड़कर और सामाजिक श्रेणी के अंतराल को दूर करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। इस योजना में कक्षा 6 से 12 तक अध्ययन करने वाली 10 से 18 वर्ष की बालिकाओं को प्रवेश का प्रावधान है। विशेषकर अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति, गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में गतिविधि करती बालिकाएं।

जरा बताइए –

1. नीचे दिये गये चारो चित्रों में जो परिस्थितियां दिखाई गई हैं उनकों क्या बदला जा सकता है? यदि हाँ तो कैसे?
2. एक नेतृत्वकर्ता के तौर पर सोचिए, यदि आपकी शाला में इस तरह की बालिकाएँ आती हैं तो आप अपनी शिक्षण योजना में क्या बदलाव करेंगी? आपकी शिक्षण योजना किस तरह की होगी? एक योजना तैयार कीजिए।

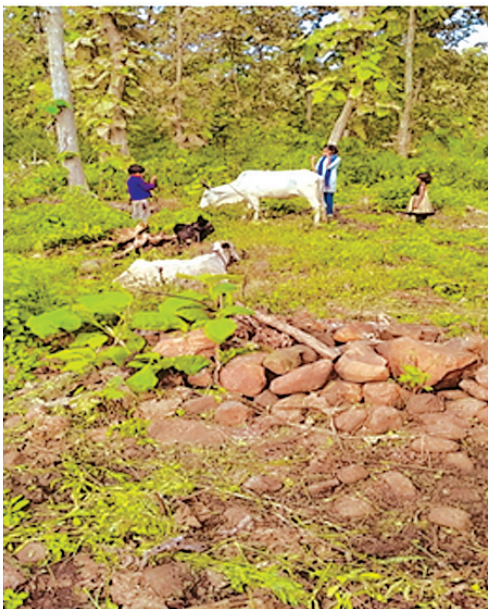

जैसा कि आपने चार चित्रों को देखा, बालिका शिक्षा की स्थिति पर चर्चा की। अब गहराई से समझने के लिये एक केस स्टडी पढ़ेंगे।

केस स्टेडी – ऐसे बदली हरीश के परिवार की तस्वीर

तजपुरा गांव के हरीश के यहां दो बालक एवं दो बालिकाएं हैं। हरीश अपने बालक-बालिकाओं को नजदीक के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाने के लिये नामांकन करा देता है लेकिन बालिका को विद्यालय में पढ़ने नहीं भेजता है। एक दिन गांव के मास्टर जी गांव में छात्र उपस्थिति रजिस्टर लेकर परीक्षण करने आए तो उन्होंने देखा कि हरीश के परिवार में दो बालिकाएं नामांकन के बाद स्कूल नहीं जा रही हैं। छात्र उपस्थिति रजिस्टर में दोनों बच्चियों को शाला त्यागी के कॉलम में दर्ज कर दिया, बाद में मास्टरजी ने एसएमसी एवं शिक्षकों के सहयोग से उन दोनों बालिकाओं

को विद्यालय में नियमित आने के लिये प्रेरित किया। हरीश के परिवार में घरेलू कामों में बच्चियों को लगा दिया जाता था। और बच्चियों को विद्यालय नहीं भेजा जाता था। लेकिन शिक्षकों ने घर जाकर उससे एवं उसके परिवार के लोगों से संपर्क किया और बालिकओं की पढ़ाई का महत्वथ बताया तो वह नियमित विद्यालय भेजने लगा।

प्रश्न 1. हरीश की सोच बालिका शिक्षा के प्रति कैसी थी?

प्रश्न 2. मास्टर जी ने हरीश के घर जाकर क्या किया?

प्रश्न 3. आप मास्टर जी की जगह होते तो हरीश को क्या समझाते?

प्रश्न 4. क्याा बालिकाओं को पढ़ाना जरूरी है?

समेकन :

मॉडयूल के प्रथम भाग में आपने जाना कि बालिका शिक्षा के प्रति समाज में जागरूकता लाने के लिये मध्य प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाओं का क्रियान्वयन शिक्षा विभाग, महिला बाल विकास विभाग, स्वास्थ्य विभाग, असशासकीय संघठनों, समुदाय के सहयोग से किया जाता है। इससे बालिकाओं के शैक्षिक स्तर, रहन-सहन, जीवन स्तर में वृद्धि हुई।

भाग - 2 :
बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि करना

उद्देश्य :

विद्यालय में ठहराव के लिये रणनीति तैयार कर सकेंगे।

परिचय

हमारे देश में स्वतंत्रता के समय महिला शिक्षा की स्थिति सम्मान जनक नहीं थी। 2001 की जनगणना के अनुसार महिला साक्षरता का प्रतिशत 54.16 था 2011 की जनगणना में यह बढ़कर 65.46 हो गया। हमारे प्रदेश में दो महिलाओं में से एक महिला निरक्षर है अर्थात पढ़ना लिखना नही जानती। सर्वे के अनुसार कक्षा 1 में दर्ज होने वाली 100 बालिकाओं में से कक्षा 8 तक 60 बालिकाएं, कक्षा 10 तक 20 बालिकाएं पहुंचती है। अतः 80 प्रतिशत बालिकाएं ड्राप आउट हो जाती हैं।

गतिविधियां

अब सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि ऐसे कौन से कारण हैं जो बालिकाओं को अपनी शिक्षा पूरी करने नहीं देते और शाला छोड़ने को मजबूर करते हैं। जिन कारणों से बालिकायें शाला में दर्ज नही होती या दर्ज होने से पहले शाला छोड़ देती हैं इसके समाधान के लिये क्या किया जा सकता है इस पर ध्यान दिया जाना जरूरी है।

बालिकाओं के शाला न जाने के कारण –

1. आर्थिक कारण

- खेती या मजदूरी में लगे रहना।
- जानवर चराना।
- परिवार की कमजोर स्थिति।
- पलायन

2. सामाजिक कारण

- माता पिता की रूढ़िवादी सोच।
- समाज द्वारा बालिका शिक्षा को महत्व न देना।
- पारिवारिक जिम्मेदारी का वहन।

3. शैक्षणिक कारण

- ग्राम में शिक्षा की सुविधा न होना।
- शाला का वातावरण उपयुक्त न होना।
- असुरक्षा का भय।
- स्कूलों में महिला शिक्षिका का अभाव।
- भौतिक कारण।
- विद्यालय में शौचालय का अभाव।
- पेयजल सुविधाओं का अभाव।

जैसा कि हमने विद्यालयों में बालिकाओं के शाला न जाने के अलग-अलग कारणों को जाना। अब आप बालिका के शिक्षा के विकास के लिये कुछ सोचिए।

- एक नेतृत्वकर्ता के रूप में बालिकाओं को शिक्षा से जोड़े रखने के लिये आप क्या-क्या कर सकते हैं। इसकी योजना बनायें।
- आप आसपास बालिका शिक्षा की कौन-कौनसी चुनौतियों को देखते हैं? विचार कर लिखें।

समेकन :

अभी तक हमने जाना कि बालिकाओं के ठहराव में वृद्धि किस प्रकार की जाती है, क्योंकि बालिका शिक्षा के क्षेत्र में हमारे समाज की सोच सकारात्मक नहीं है। हमारे समाज में बालिकाओं को शिक्षा के अलावा अन्य- कार्यों में लगा दिया जाता है और जो बालिकाएं विद्यालय में प्रवेश लेती हैं वह भी प्रारंभिक शिक्षा की पढ़ाई पूरी होने से पहले ही विद्यालय को छोड देती हैं। अतः ठहराव एवं गुणवत्ता हेतु किये गये प्रयास विफल हो जाते हैं।

भाग - 3 :
बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं को जानना

उद्देश्य :

बालिका शिक्षा से संबंधित शासन की विभिन्न योजनाओं से पालकों, साथी शिक्षकों एवं बालिकाओं को अवगत कराना।

परिचय

भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े 280 विकास खंडों में जहां ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की साक्षरता की स्थिति कमजोर है एवं महिलाओं और पुरूषों की साक्षरता दर में अंतर अधिक है अथवा अनुसूचित जाति, जनजाति की महिलाओं को बढावा देने के लिये ढ़ेर सारी योजनाएं चलाई गई।

भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा बालिका की शिक्षा के संचालन के लिये विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चलाये गये। जैसे -

बालिका छात्रावास, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (केजीबीव्ही), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, सर्व शिक्षा अभियान, समग्र शिक्षा अभियान, बालिका छात्रावास, निःशुल्क साइकल वितरण, निःशुल्क गणवेश एवं पाठ्यपुस्तक वितरण, सामान्य निर्धन छात्रवृत्ति योजना, मॉडल कलस्टर शाला, खोज यात्रा (एक्स पोजर विजिट), मां बेटी मेला का आयोजन, बालिका शिक्षा में अच्छा कार्य करने वाली शालाओं को पुरस्कार, कन्या साक्षरता प्रोत्साहन, लाडली लक्ष्मी योजना।

बालिका शिक्षा कार्यक्रमों का प्रभावः- इस तरह के कई कार्यक्रम चलाने के बाद बालिका शिक्षा में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला। जिससे उनके ठहराव, गुणवत्ता, जीवनस्तर में सुधार हुआ।

निःशुल्क साइकिल वितरण।

खेल खेलती बच्ची।

केस स्टडी- कोठरी गांव के माध्यमिक विद्यालय में ऐसे बदली शिक्षा की तस्वीर

रंगोली बनाती बालिकाएं।

खेल खेलती बालिकाएं।

विद्यालय में कुल 350 बालक बालिकाएं दर्ज थे। जिसमें बालिकाओं की संख्या 170 थी। वहां पर प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों से चर्चा की कि पहले हमारे विद्यालय में बालिकाओं का नामांकन बहुत कम था। पालकों में बालिका शिक्षा के प्रति रुचि नही थी। बार-बार प्रयास करने के बाद भी माता-पिता अपनी बच्चियों की शादी कम उम्र में कर देते थे। एक बार बीआरसीसी महोदय का आगमन हमारे गांव में हुआ। और उन्होंने छात्र उपस्थिति रजिस्टर देखा तो बहुत सी बालिकाएं अनियमित थी। उन्होंने गांव एवं आसपास के अन्य गांवों का भ्रमण कर पाया कि यहां पर बालिका शिक्षा की स्थिति कमजोर है और अनुसूचित जाति एंव जनजाति की बच्चियां शिक्षा से वंचित हैं। तब उन्होंने कोठरी में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खोलने का प्रस्ताव राज्य शिक्षा केन्द्र को भेजा और वहां पर 100 सीटर कस्तूरबा गांधी विद्यालय स्वीकृत हो गया। अब इस विद्यालय में प्रथम सत्र में ही प्रचार प्रसार करने पर 100 छात्राओं ने प्रवेश लिया और प्रवेश के साथ ही पढ़ाई शुरू की। उन छात्राओं की कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में आवास व्यवस्था रहती है एवं स्थानीय माध्यमिक विद्यालय में अपनी पढ़ाई करती हैं। इस प्रकार कस्तूरबा गांधी विद्यालय के माध्यम से बालिकाओं की शिक्षा में बदलाव आया। वहां पर उनकों आवास के साथ सिलाई, कढ़ाई, रंगोली बनाना, मेंहदी लगाना, संगीत, जूडो कराटे, स्पोर्ट, व्यवसायिक कौशल एवं अन्यं खेल गतिविधियां आयोजित कराई जाती हैं। इससे बालिकाओं के जीवन में बदलाव आ गया और अगले वर्ष और अधिक बालिकाएं शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ गई।

चिंतन मनन के प्रश्न –

प्रश्न- कोठरी गांव में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय खुलने से पहले शिक्षा की क्या स्थिति थी?

.....

.....

.....

प्रश्न- एक नेतृत्व कर्ता के रूप में बालिका शिक्षा से संबंधित योजनाओं का लाभ सभी बालिकाओं को मिल सके, इसके लिये क्या-क्या कर सकते हैं?

.....

.....

.....

कुमारी मधु कर्मा की सफलता की कहानी
'उम्मीदों की उड़ान'

कु. मधु ग्रामीण क्षेत्र के ग्राम मंजाखेड़ी की गरीब परिवार की बेटी है। यह बालिका खेलकूद की प्रतियोगिताओं में प्रतिभावान है। मधु ने जिले में 1500 मी. की दौड़ में प्रथम स्थान प्राप्त कर गोल्ड मेडल प्राप्त किया। कु. मधु कर्मा ने रांची झारखंड में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की फुटबाल प्रतियोगिता में भाग लिया था। मधु पर एक डाक्यूमेंट्री फिल्म बनी जिससे सभी बालिकाओं को प्रेरणा मिलती है। इस फिल्म में अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा द्वारा मधु जैसी होनहार बालिका की प्रशंसा की गई।

कु. मधु कर्मा का कहना है कि बालिका छात्रावास की सुविधा मिलने के कारण मैं पढ़ पा रही हूँ अन्यथा मुझे सिर्फ मजदूरी करने जाना पड़ता। छात्रावास मेरे जीवन में सफलता की सीढ़ी है।

देखें - https://youtu.be/DFl11wEwT1I
(Globel Education Point)

चर्चा के प्रश्नः-

1. मधु ने यह उपलब्धि कैसे प्राप्त की?
2. क्या खेल बालिकाओं की शिक्षा में सहभागिता बढ़ाते हैं?
3. छात्रावास बालिकाओं की शिक्षा के लिए क्या भूमिका निभाता है?

भाग - 4 :

बालिकाओं के ठहराव एवं शैक्षणिक स्तर में वृद्धि करना

उद्देश्य :

विद्यालय में दर्ज बालिकाओं का शत प्रतिशत ठहराव करना एवं गुणवत्ता बढ़ाना।

परिचय

विद्यालय में दर्ज बालिकाओं को विद्यालय का आकर्षक वातावरण बनाकर एवं विद्यालय में पेयजल, शौचालय, खेल गतिविधियां एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षण कराकर बालिकाओं का ठहराव सुनिश्चित हो जाता है। तब बच्चियों की गुणवत्ता सुधार के प्रयास किये जाते हैं। विद्यालय में बालिकाओं को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं में बालिकाओं पर अधिक से अधिक ध्यान देना, साथ ही पाठ सहगामी क्रियाओं में बालिकाओं को अधिक से अधिक अवसर दिया जाना। इस हेतु सभी शिक्षकों एवं प्राधानाध्यापकों को प्रशिक्षण के माध्यम से प्रेरित कर बालिकाओं की गुणवत्ता सुधार हेतु प्रयास करना चाहिए।

जैसा कि हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि बालिका शिक्षा को समझना कठिन काम है और उनको शिक्षा से जोड़ना और कठिन काम है। बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में नेतृत्वकर्ता की महती जिम्मेदारी है कि वह विद्यालय का वातावरण और आकर्षक और समावेशी बनाये रखे ताकि बालिकाएं गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण कर सकें।

गतिविधि - हम क्याा कर सकते हैं अगर एक बेहतर नेतृत्वकर्ता हैं तो

- बालिकाएं गणित शिक्षण में कमजोर हों तब?
- बालिकाएं खेल गतिविधियों में भाग नहीं ले रही हैं तब?
- बालिकाएं बाल सभा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग नहीं ले रहीं है तब?

केस स्टडी

बालिका शिक्षा की बदलती तस्वीर।

बालिका छात्रावास रेहटी जिला सीहोर

मीन्स कम मेरिट परीक्षा में उत्तीर्ण होकर बालिकाओं ने लहराया जीत का परचम।

माना अंधेरा घना है पर दीपक जलाना कहाँ मना है।

बालिका छात्रावास, रेहटी, विकासखंड बुधनी, जिला-सीहोर वर्ष 2019-20 में कक्षा आठवीं में कुल 12 छात्राएं अध्ययनरत थी। समस्त 12 छात्राओं को राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा 2019-20 के लिये तैयारी कराई गई। सतत मार्गदर्शन व प्रेरणा से 12 बालिकाओं में से 09 बालिकाओं ने राष्ट्रीय मीन्स कम मेरिट परीक्षा 2019-20 में सफलता हासिल कर स्वयं का, छात्रावास का, विकासखंड एवं जिले का नाम रोशन किया।

सभी बालिकाओं को छात्रावास में अच्छा लगता है। यहां रहकर वे पढ़ाई के अलावा शास्त्रीय संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं स्केचिंग आदि कला में भी निपुण हो रही हैं। छात्रावास में सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, रंगोली, जूडो कराटे, निबंध, वाद विवाद, अंतक्षारी, खेल गतिविधियां कराई जाती हैं।

चर्चा के प्रश्न –

1. क्या हर छोटा बदलाव बडी कामयाबी का हिस्सा होता है?
2. बालिकाओं के शैक्षणिक स्तर की वृद्धि में कौन-कौन से कारक प्रभाव डालते हैं?

विद्यालय में कराई जाने वाली वास्तविक गतिविधि -

1. शैक्षणिक गतिविधियाँ।
2. खेल गतिविधियाँ।
3. खोज यात्रा
4. समूह गतिविधि।
5. बालसभा की गतिविधियाँ।

एक बेहतर नेतृत्वकर्ता के लिये जरूरी है कि वह अपनी टीम एवं खुद की क्षमता का अवलोकन कर बालिका शिक्षा के विकास के लिये समाज को बदल सके। इसके लिये कई निगरानी समूह बनाने होंगे-

बालिका शिक्षा में बालिकाओं की अधिक से अधिक सहभागिता हेतु पढ़ाई के साथ-साथ पाठ सहगामी क्रियाएं, मां बेटी मेला का आयोजन, आउटडोर और इंडोर खेल, बालसभा आदि गतिविधियों के प्रभाव से बालिकाओं के ठहराव एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है। बालिकाएं विद्यालय में नियमित उपस्थित रहती हैं। बालिकाओं के रहन सहन, साफ सफाई, बोल चाल, शिक्षा की गुणवत्ता से जीवन स्तरों में सुधार हुआ है।

संदर्भ सूची –

- कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की गाइड लाइन।(MP EDUCATION PORTAL)
- बालिका छात्रावास निर्देश। (MP EDUCATION PORTAL)
- सर्वशिक्षा अभियान की गाईड लाइन। (MP EDUCATION PORTAL)
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

लेखक का नाम
श्रीमती मुक्ता गुप्ता
श्री धर्म सिंह
डाईट सीहोर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
मुन्नालाल शर्मा
उच्च श्रेणी शिक्षक
शासकीय मॉडल उमावि, कोलारस
जिला - शिवपुरी, म.प्र.
मोबाइल- +91-9329261915
ई मेल- munnalalsharma960@gmail.com

❑ ❑ ❑